(3.) (1)

Lecture No:- 36.

TOPIC,

(1.) Jaina.

On line class.
Date, 8|5|2020.
Time - 10:50 to 11:40 A.M

Dr. Surita Kumari
Depart. of Philosophy.
B.A Part - II Paper - III (H.)
A.N.D. college Shahpur Patory.
Samastipur.

Ans:-) जैनधर्म की सफलता इस बात पर निर्भर थी कि महावीर, और अन्य जैन उपदेशकों ने अपने विचारों को जनता के सहज सरल और सुबोध भाषा में रखा। इस धर्म में आस्था रखना सरल था। निर्वाण की प्राप्ति के लिए न तो पुरोहितों के माध्यम की जरूरत थी, न ही यज्ञ एवं बलि की। बिना किसी विशेष झंझट के पाँच महाव्रतों एवं त्रिरत्नों का पालन कर मनुष्य निर्वाण प्राप्त कर सकता था।

जैनधर्म के अनुसार पापों से बचकर निर्वाण प्राप्ति के लिए मनुष्य को तीन रत्नों (त्रिरत्न)

P.T.O.

का पालन करना चाहिए। ये तीन रत्न हैं— सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र (आचरण)

(i) उचित दर्शन (सम्यक् दर्शन)— यहाँ 'दर्शन' शब्द का प्रयोग एक विशेष अर्थ में किया गया है। तीर्थंकरों की आज्ञाओं में श्रद्धा एवं विश्वास रखना आवश्यक है, किंतु इस अर्थ यह नहीं कि यहाँ अंधविश्वास को आश्रय दिया गया है। प्रख्यात जैन दार्शनिक मणिभद्र ने ठीक ही कहा है— न मेरा महावीर के प्रति कोई पक्षपात है और न कपिल या अन्य दार्शनिकों के प्रति द्वेष ही है। मैं युक्तिसंगत वचन को ही मानता हूँ, चाहे वह किसी का भी हो। इस प्रकार केवल युक्तिसंगत बात में ही श्रद्धा या विश्वास आवश्यक माना गया है।

पाश्चात्य विचारक भी ज्ञानप्राप्ति के लिए विश्वास

की भी किसी सीमा तक आवश्यक बताते है। संशयवादियों (Skeptics) को भी अपनी विचारधारा में विश्वास रखकर ही आगे बढ़ना पड़ता है।

प्रत्येक वस्तु को अविश्वास की दृष्टि से देखने पर काम नहीं चल सकता। इसलिए

जैनों का कहना है कि तीर्थंकरों में थोड़ा भी विश्वास लेकर उनके उपदेशों का अध्ययन एवं मनन करने से (केवलज्ञान)

अर्थात पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति की जा सकती है।

(iii) उचित ज्ञान (सम्यक ज्ञान) – विश्वास के साथ-साथ ज्ञान भी आवश्यक माना गया है। जीव और अजीव का अंतर समझना एवं वास्तविकता की पहचान करना ही सम्यक ज्ञान है। अज्ञान ही बंधन का मूल कारण है। इसलिए मोक्ष की प्राप्ति में ज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान है। etc.

END.